संस्कृत कैसे सीखें? (समास)

How to Learn Sanskrit? (Samaas)

आकृति ठाकुर[1] एवं योगेश शर्मा[2]

Aakriti Thakur[1] and Yogesh Sharma[2]

[1]शोधच्छात्रा, संस्कृत, दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

[2]सह आचार्य, कलाकोश विभाग, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली

aakrititthakur2@gmail.com[1], ycsharma2000@yahoo.co.in[2]

https://doi.org/10.5281/zenodo.17954395

'सम्' पूर्वक 'असु क्षेपणे' (दिवादिगण, परस्मैपद) धातु से भाव में घञ् (अ) प्रत्यय कर एवं 'अत उपधायाः' से उपधा वृद्धि करके 'समास' शब्द निष्पन्न होता है। सरल शब्दों में, 'संक्षेप', 'संक्षिप्तीकरण' या 'मिलाने' को समास कहते हैं। यह योगरूढ पारिभाषिक शब्द है। अतः संक्षेप को समास नहीं कहते, अपितु जब दो या दो से अधिक पद मिलकर एक पद हो जाता है, तो उसे 'समास' कहते हैं। समास हो जाने पर उन समस्यमान पदों की प्रायः विभक्ति अदृष्ट होती है, परन्तु उसका अर्थ वही रहता है। पुनः नये सिरे से समास को एक शब्द या प्रातिपदिक मानकर नई विभक्ति आ जाती है, तब वह पूर्णतः नवीन शब्द बन जाता है। जैसे – सीतायाः पतिः = सीतापतिः (सीता के पति, अर्थात् श्रीराम)। समास सुबन्तों का होता है, तिङन्तों का नहीं। दो या दो से अधिक सार्थक/समर्थ सुबन्त का समर्थ सुबन्त के साथ समास होता है। द्वन्द्व समास को छोड़कर दो या दो से अधिक पदों का ही समास होता है। द्वन्द्व में दो या तीन पदों का एक साथ समास हो जाता है। जैसे–

1. **राजपुरुषागमनम्**

   राज्ञः पुरुषः = राजपुरुषः

   राजपुरुषस्य आगमनम् = राजपुरुषागमनम् (राजा के पुरुष का आगमन)

2. **हरिहरगुरवः**

   हरिश्च, हरश्च, गुरुश्व = हरिहरगुरवः (हरि, हर और गुरु)

   परस्परान्वितयोः सुबन्तयोः समासः भवति, अर्थात् जो जिसके साथ अन्वय की योग्यता रखता है, उसी पद का उसी के साथ समास होता है। यथा– राजः पुत्रः = राजपुत्रः। यहाँ राजा पुत्र के साथ अन्वित है –

   दशरथस्य पुत्रः राजा अस्ति।

   (दशरथ का पुत्र राजा है)

इस वाक्य में दशरथ का पुत्र के साथ अन्वय है, अतः दोनों का समास होगा दशरथस्य पुत्रः– दशरथपुत्रः और पुत्रः राजा में अन्वय हैं – राजपुत्रः, किन्तु दशरथ का राजा के साथ अन्वय नहीं है, इसीलिए इन दोनों पदों का समास नहीं होगा। अतः समास सार्थक/समर्थ सुबन्तों का होता है। कहीं सुबन्त का तिङन्त के साथ भी समास देखा जाता है – परि अभूषयत् होकर पर्यभूषयत्। इसी प्रकार, वि + अचलत् = व्यचलत्। अर्थबोध के लिए सामासिक पदों के विग्रह की व्यवस्था व्याकरण में देखने को मिलती है। वृत्तियों के अर्थ का बोध कराने के लिए जो वाक्य या पदावली प्रयुक्त की जाती है, उसे विग्रह कहते हैं –

वृत्यर्थावबोधकवाक्यं विग्रहः।

स च लौकिकोऽलौकिकश्चेति द्विधा।

विग्रह दो प्रकार का होता है। एक लौकिक और दूसरा अलौकिक। लोक (लौकिक संस्कृत भाषा) में जो प्रयोग आदि होता है, उसे लौकिक विग्रह कहते हैं। जैसे – **राज्ञ पुरुषः**

इस लौकिक विग्रह का समस्त पद 'राजपुरुषः' होगा। अलौकिक विग्रह प्रयोग में नहीं आता, वह व्याकरण की प्रक्रिया दर्शाने के लिए ही होता है। 'राजपुरुषः' का अलौकिक विग्रह है –

राजन् ङस् + पुरुष सु

अलौकिक विग्रह प्रत्येक समास का हुआ करता है, परन्तु लौकिक विग्रह तभी होता है जब समास वैकल्पिक हों। यदि समास नित्य है तो लौकिक विग्रह या तो किया ही नहीं जाता अथवा अस्वपदविग्रह किया जाता है। अस्वपदविग्रह में समस्यमान पदों से भिन्न पदों के द्वारा विग्रह दर्शाया जाता है। यथा – उपकृष्णम् = कृष्णस्य समीपम्, यथाशक्ति – शक्तिम् अनतिक्रम्य, ये क्रमशः अस्वपद लौकिक विग्रह हैं।

समास के भेद –

सामान्यतया समास अर्थ का विषय है, अर्थात् समास अर्थ पर आश्रित है। उस समस्त पद में किसका अर्थ प्रधान है। इसी आधार पर समास के चार भेद होते हैं – **अव्ययीभाव, तत्पुरुष, द्वन्द्व** और **बहुव्रीहि**, किन्तु सिद्धान्तकौमुदीकार ने समास के पाँच भेद माने हैं – **यथा समासः पञ्चधा। तत्र समसनं समासः।**

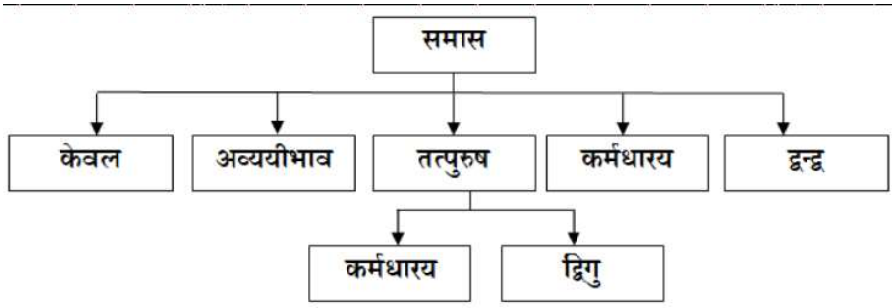

1. केवल समास

जिस समास की कोई विशेष संज्ञा नहीं की जाती, वह केवल समास होता है। यथा – भूतपूर्वः (जो पूर्व में हुआ है)।

2. अव्ययीभाव समास

जो शब्द समास होने के पूर्व तो अव्यय न हो, किन्तु समास होने पर अव्यय हो जाए, वही अव्ययीभाव समास है। सामान्यतः जिस समास में पूर्वपद का अर्थ प्रायः प्रधान होता है, उसे अव्ययीभाव कहते हैं। इस समास में प्रायः पूर्वपद अव्यय होता है और उत्तरपद अनव्यय, परन्तु समास होने पर समस्त पद अव्यय बन जाता है। यथा – अधिहरि (हरि में)।

3. तत्पुरुष समास

जिस समास में उत्तरपद का अर्थ प्रायः प्रधान होता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। यह समानाधिकरण और व्यधिकरण भेद से दो प्रकार का है।

तत्पुरुष समास का ही एक भेद होता है – कर्मधारय।

तत्पुरुषभेदः कर्मधारयः। तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः।

जब तत्पुरुष समास में दोनों पद एक ही अधिकरण (वाच्य) को कहते हैं तो वहाँ कर्मधारय समास होता है। यथा – नीलम् + उत्पलम् = नीलोत्पलम्।

कर्मधारय का एक भेद होता है – द्विगु। कर्मधारय समास में जब पूर्वपद संख्यावाचक होता है तो उसे द्विगु समास कहते हैं। द्विगु समास में पूर्वपद संख्यावाचक ही होता है, किन्तु संख्यावाचक सभी पद द्विगु ही नहीं होते हैं। जैसे – पञ्चानां गंगानाम् समाहारः = 'पञ्चगंगम्' यहाँ अव्ययीभाव समास है।

4. बहुव्रीहि समास

यह विशेषण–विशेष्य का समास है, किन्तु इसमें अन्य पदार्थ प्रधान है। जिस समास में समस्यमान पदों के अतिरिक्त किसी अन्यपद का अर्थ प्रायः प्रधान रहता है, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। समास घटकस्य पदस्य अर्थः यदि क्रियया अन्वितो भवति तर्हि बहुव्रीहिः इत्यर्थः। यथा – पीतानि अम्बराणि यस्य सः पीताम्बरः (पीत वस्त्र हैं जिनके, अर्थात् भगवान् विष्णु)

5. द्वन्द्व समास

जिस समास में दोनों पदों का अर्थ प्रायः प्रधान होता है, उसे द्वन्द्व समास कहते हैं। यदि दोनों पदार्थ क्रिया से अन्वित होते हैं तो वह द्वन्द्व कहलाता है। जैसे – रामकृष्णौ।

समास को समझने हेतु एक बहुचर्चित एवं रोचक पद्य दृष्टिगत है, जिसके भावानुवाद से सभी समास–भेदों का अर्थ सरलता से ग्रहण किया जा सकता है –

द्वन्द्वोऽस्मि द्विगुरपि च गृहे च मे सततमव्ययीभावः।

तत्पुरुष कर्मधारय येनाहं स्यां बहुव्रीहिः।

अर्थात् कोई निर्धन ब्राह्मण राजा के दरबार में जाकर अपनी करुणा गाथा का वर्णन इस प्रकार करता है। है राजन्! मैं **'द्वन्द्व'** हूँ, मैं अकेला नहीं, बल्कि भार्या का भी भरण–पोषण करना पड़ता है। मैं **'द्विगु'** भी हूँ, मेरे घर पर दो बैल भी हैं, जिनको प्रतिदिन खिलाना पड़ता है, मेरे पास निरन्तर **'अव्ययीभाव'**, अर्थात् खर्च के लिए फूटी कौड़ी भी नहीं है। इसलिए हे श्रेष्ठ पुरुष! तत् **'कर्मधारय'**, अर्थात् ऐसा काम करो, जिससे मैं **'बहुव्रीहि'** बहुत धन वाला हो जाऊँ।

समास के लिए निम्नलिखित बातें ध्यातव्य हैं –

- समर्थ अर्थात् परस्पर संश्लिष्टार्थ पदों में ही समास होता है असम्बद्धार्थी में नहीं।
- सर्वप्रथम समासविधायक सूत्र की प्रवृत्ति होगी।
- समूचे समुदाय की प्रातिपदिक संज्ञा (कृत्तद्धितसमासाश्च) कर सुपोधातुप्रातिपदिकयोः से सुपों/विभक्तियों का लोप होता है।
- पूर्वपद का निर्णय।
- अन्त में प्रातिपदिक संज्ञा कर विभक्ति प्रयोग।

1. केवल समास – जिस समास की कोई विशेष संज्ञा नहीं की जाती, वह केवल समास होता है। समर्थ सुबन्त का समर्थ सुबन्त के साथ समास होता है। एक सुबन्त दूसरे सुबन्त के साथ विकल्प से समास को प्राप्त होता है। समास की प्रातिपदिक संज्ञा हो जाने के कारण समास के अवयव सुपों का 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' से लुक् हो जाता है। यथा – **अभूतपूर्वः** (पूर्वम् अभूतः, जो पहले कभी नहीं हुआ है)

इसी प्रकार सुबन्त शब्द का 'इव' के साथ समास होता है, परन्तु समासावयव विभक्ति का लोप नहीं होता।

क्रम सं.	सुबन्त शब्द		समास	अर्थ
1.	वागर्थौ	+	वागर्थाविव	शब्द और अर्थ के सदृश
2.	जीमूतस्य	इव	जीमूतस्येव	जीमूत के सदृश

ध्यातव्य है कि योगविभाषा की इष्ट सिद्धि के लिए कुछ तिङन्त शब्दों के उत्तरपद रहने पर समास विधि की जाती है। यह विधि वेद में है।

क्रम सं.	पूर्वपद		उत्तरपद	समास	अर्थ
1.	परि		अभूषयत्	पर्यभूषयत्	सुशोभित करता है
2.	वि	+	अचलत्	व्यचलत्	चलता है

2. अव्ययीभाव समास

जिस समास में पूर्वपद का अर्थ प्रायः प्रधान होता है उसे अव्ययीभाव कहते हैं। पूर्व में अधि, उप, अनु आदि अव्यय होते हैं तथा समस्तपद अव्यय होता है। विभक्ति, समीप, समृद्धि (ऋद्धि का आधिक्य), व्यृद्धि (ऋद्धि का अभाव), अर्थाभाव (वस्तु का अभाव), अत्यय (नष्ट होना/अतीत होगा), असम्प्रति (अब युक्त न होना) शब्द प्रादुर्भाव (शब्द की प्रकाशता प्रसिद्धि), पश्चात् (पीछे) यथा (योग्यता, वीप्सा, पदार्थानतिवृत्ति और सादृश्य), आनुपूर्व्य (क्रमानुसार, क्रमशः), योगपद्य (एकसाथ होना), सादृश्य, सम्पत्ति (अनुरूप, आत्माभाव), साकल्य (सम्पूर्णता) और अन्त (समाप्ति) इन सोलह अर्थों में से किसी भी अर्थ में विद्यमान जो अव्यय सुबन्त है, वह समर्थ सुबन्त के साथ नित्य समास को प्राप्त होता है और वह समास अव्ययीभाव संज्ञक होता है। यह नित्य समास है, अतः इसका या तो लौकिक विग्रह होता नहीं या अस्वपद विग्रह होगा।

अव्ययीभाव समास के आवश्यक नियम निम्नलिखित हैं –

1. अव्ययीभाव समास के अन्तिम् पद के अन्त में अ, आ को अ इ, ई, ए, ऐ को इ उ, ऊ, ओ, औ को उ तथा ऋ को ऋ होता है।
2. अव्ययीभाव समास यदि अदन्त है तो सुपों का 'अव्ययादाप्सुपः' से लोप न होकर पञ्चमी को छोड़कर सुपों को अम् आदेश हो, परन्तु यह अम् आदेश तृतीया एवं सप्तमी में बहुलता से होता है।
3. अव्ययीभाव यदि अदन्त न हो तो उससे परे सुपो का 'अव्ययादाप्सुपः' से लोप हो।
4. अव्ययीभाव के अन्त में यदि दीर्घ हो उसे ह्रस्व आदेश करना चाहिए।

क्रम सं.	विभिन्न अर्थों में अव्यय का समास	लौकिक विग्रह	सामासिक शब्द	अर्थ
1.	विभक्ति अर्थ में अधि अव्यय का समास	हरौ इति	अधिहरि	हरि में
2.	समृद्धि अर्थ में सु अव्यय का समास	मद्राणां समृद्धिः	सुमद्रम्	मद्र देश के लोगों की समृद्धि
3.	व्यृद्धि अर्थ में दुर् अव्यय का समास	यवनानां व्यृद्धि	दुर्यवनम्	यवनों की समृद्धि का अभाव

4.	अभाव अर्थ में निर् अव्यय का समास	मक्षिकाणाम् अभावः	निर्मक्षिकम्	मक्खियों का अभाव
5.	अत्यय अर्थ में अति अव्यय का समास	हिमस्य अत्ययः	अतिहिमम्	शीत का व्यतीत हो जाना
6.	असंप्रति अर्थ में अति अव्यय का समास	निद्रा सम्प्रति न युज्यते इति	अतिनिद्रम्	निद्रा इस समय उचित नहीं
7.	शब्दप्रकाश अर्थ में इति अव्यय का समास	हरिशब्दस्य प्रकाशः	इतिहरि	हरि शब्द की प्रसिद्धि
8.	पश्चात् अर्थ में अनु अव्यय का समास	विष्णोः पश्चात्	अनुविष्णु	विष्णु के पीछे
9.	योग्यता अर्थ में अनु अव्यय का समास	रूपस्य योग्यम्	अनुरूपम्	रूप के योग्य
10.	सादृश्य अर्थ में स / सह अव्यय का समास	हरेः सादृश्यम्	सहरि	हरि के समान
11.	वीप्सा अर्थ में प्रति अव्यय का समास	अर्थम् अर्थम् प्रति	प्रत्यर्थम्	प्रत्येक अर्थ के प्रति
12.	अनतिक्रम्य अर्थ में यथा अव्यय का समास	शक्तिम् अनतिक्रम्यः	यथाशक्तिः	शक्ति के अनुसार
13.	आनुपूर्व्येण अर्थ में अनु अव्यय का समास	ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्येण	अनुज्येष्ठम्	ज्येष्ठ के क्रम में
14.	युगपत् अर्थ में स / सह अव्यय का समास	चक्रेण युगपत्	सचक्रम्	चक्र के साथ
15.	सदृश अर्थ में स/सह अव्यय का समास	सख्या सदृशः	ससखि	सखि के समान
16.	सम्पत्ति अर्थ में स/सह अव्यय का समास	क्षत्राणां सम्पत्तिः	सक्षत्रम्	क्षत्रियों का स्वानुरूप क्षत्रियत्व
17.	सम्पूर्ण अर्थ में स / सह अव्यय का समास	तृणमपि अपरित्यज्यम्	सतृणम्	तिनके को भी छोड़े बिना
18.	अन्त अर्थ में स / सह अव्यय का समास	अग्निग्रन्थपर्यन्तम् (अधीते)	साग्नि	अग्नि ग्रन्थ की समाप्ति तक

नोट – यथा के चार अर्थ होते हैं– (1) अनतिक्रम्य (2) वीप्सा (3) सादृश्य, एवं (4) योग्यता।

इसी प्रकार, मर्यादा अथवा अभिविधि अर्थ में अव्यय का सुबन्त के साथ विकल्प से अव्ययीभाव समास हो जाता है। जैसे –

क्रम सं.	लौकिक विग्रह	सामासिक शब्द	अर्थ
1.	आ हिमालयात्	आहिमालयम्	हिमालय तक
2.	आ समुद्रात्	आसमुद्रम्	समुद्र तक
3.	आ बालवृद्धात्	आबालवृद्धम्	बाल से वृद्ध तक
4.	आमुक्तेः	आमुक्ति	मुक्ति तक
5.	आबालेभ्यः	आबालम्	बालक तक

इसी प्रकार एक अन्य नियम के अनुसार, यदि समाहार अर्थ इष्ट हो तो संख्यावाचक सुबन्तों का नदीवाचक सुबन्तों के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे – **पञ्चगंगम्, द्वियमुनम्, पञ्चनदि** इत्यादि।

इस प्रकार विविध अर्थों में अव्ययीभाव समास के प्रयोग देखे जा सकते हैं, जिनमें से कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं –

क्रम सं.	लौकिक विग्रह	सामासिक शब्द	अर्थ
1.	शरदः समीपम्	उपशरदम्	शरद् के समीप
2.	विपाशम् प्रति	प्रतिविपाशम्	व्यास नदी के सम्मुख
3.	जरायाः समीपम्	उपजरसम्	बुढ़ापे के समीप
4.	राज्ञः समीपम्	उपराजम्	राजा के समीप
5.	आत्मनि इति	अध्यात्मम्	आत्म में
6.	राज्ञि इति	अधिराजम्	राजा में
7.	चर्मणः समीपम्	उपचर्मम्	चर्म के समीप
8.	नद्याः समीपम्	उपनदन् / उपनदि	नदी के समीप
9.	पौर्णमास्याः समीपम्	उपपौर्णमासम्	पूर्णिमा के समीप
10.	दिशः समीपम्	उपदिशम्	दिशा के समीप
11.	दिशि इति	अधिदिशम्	दिशा में
12.	मनसि	अधिमनसम्	मन में
13.	सरितः समीपम्	उपसरितम् / उपसरित	सरिता के समीप
14.	गोः समीपे	उपगो, उपगू	गाय के समीप
15.	कृष्णस्य समीपम्	उपकृष्णम्	कृष्ण के समीप
16.	गंगायाः समीपम्	उपगंगम्	गंगा के समीप

17.	यमुनायाः समीपम्	उपयमुनम्	यमुना के समीप
18.	जनानाम् अभावः	निर्जनम्	लोगों का अभाव
19.	विघ्नानां अभावः	निर्विघ्नम्	विघ्नों का अभाव
20.	द्वन्द्वानां अभावे	निर्द्वन्द्वम्	द्वन्द्व का अभाव
21.	मक्षिकाणां अभावे	निर्मक्षिकम्	मक्खियों का अभाव
22.	रथस्य पश्चात्	अनुरथम्	रथ के पीछे
23.	हरेः पश्चात्	अनुहरि	हरि के पीछे
24.	ग्रहस्य पश्चात्	अनुग्रहम्	ग्रह के पीछे
25.	विष्णोः पश्चात्	अनुविष्णु	विष्णु के पीछे
26.	दिनं दिनं प्रति	प्रतिदिनम्	प्रत्येक दिन
27.	अक्षरम् अक्षरं प्रति	प्रत्यक्षरम्	प्रत्येक अक्षर
28.	अर्थम् अर्थम् प्रति	प्रत्यर्थम्	प्रत्येक अर्थ
29.	सुखम् अनतिक्रम्य	यथासुखम्	सुख के अनुसार
30.	राज्यम् अनतिक्रम्य	यथाराज्यम्	राज्य के अनुसार
31.	मन्दिरस्य समीपम्	उपमन्दिरम्	मन्दिर के समीप
32.	गोपि इति	अधिगोपम्	गोप में
33.	प्रत्यूहानाम् अभावः	निष्प्रत्यूहम्	प्रत्यूहों का अभाव
34.	मशकानाम् अभावः	निर्मशकम्	मशकों का अभाव
35.	भारतानां समृद्धिः	सुभारतम्	भारतियों की समृद्धि
36.	मगधानां समृद्धिः	सुमगधम्	मगध के लोगों की समृद्धि
37.	शकानां व्यृद्धिः	दुःशकम्	शकों की व्यृद्धि
38.	क्रोध सम्प्रति न युज्यते	अतिक्रोधम्	क्रोध इस समय युक्त नहीं
39.	मौन सम्प्रति न युज्यते	अतिमौनम्	मौन इस समय युक्त नहीं
40.	कालम् अनतिक्रम्यः	यथाकालम्	काल के अनुसार
41.	बुद्धिम् अनतिक्रम्यः	यथाबुद्धि	बुद्धि के अनुसार
42.	पितुः पश्चात्	अनुपितृ	पिता के पीछे

43.	मुनोः पश्चात्	अनुमुनि	मुनि के पश्चात्
44.	वृद्धस्य आनुपूर्व्येण	अनुवृद्धम्	वृद्ध के क्रम में
45.	ह्रस्वस्य आनुपूर्व्येण	अनुह्रस्वम्	ह्रस्व के क्रम में
46.	पुस्तकेन युगपत्	सपुस्तकम्	पुस्तक के साथ
47.	तद्धित प्रकरण पर्यन्तम्	सतद्धितम्	तद्धित प्रकरण तक
48.	अक्ष्णोः योग्यम्	समक्षम्	आँखों के सामने
49.	अक्ष्णोः पश्चात्	अन्वक्षम्	आँखों से परे
50.	अक्ष्णः परम्	परोक्षम्	निपातन

इस प्रकार प्रस्तुत लेख में समास के स्वरूप, प्रकार एवं विशेषतः केवल और अव्ययीभाव समास के प्रयोग पर विचार किया गया है। इसी प्रकार आगामी लेख में शेष समास–प्रकारों के स्वरूप एवं प्रयोग पर विचार किया जाएगा।

अनुवाद

1. वागर्थाविव जगतः पितरौ पार्वतीपरमेश्वरौ वन्दे।
   (शब्द और अर्थ के सदृश संसार के माता–पिता पार्वती और परमेश्वर शिव की वन्दना करता हूँ।)
2. अत्र निर्मक्षिकमस्ति।
   (यह स्थान मक्खियों से रहित है।)
3. पंजाबः पञ्चनदप्रदेशः अस्ति।
   (पंजाब पाँच नदियों से युक्त प्रदेश है।)
4. राजपुरुषः प्रासादतः अत्रैव आगच्छति।
   (राजपुरुष महल से यही आ रहा है।)
5. श्री अटलबिहारीवाजपेयीमहोदयः भारतस्य भूतपूर्वः प्रधानमन्त्री वर्तते।
   (श्री अटल बिहारी वाजपेयी महोदय भारत के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री हैं।)
6. जगतः अन्धकारस्य हरणात् हरेः इतिहरि प्रसिद्धोऽस्ति।
   (संसार के अन्धकार का हरण करने से हरि का 'इतिहरि' शब्द प्रसिद्ध है।
7. स्वाध्यायकाले अतिनिद्रां वर्जयेत्।
   (स्वाध्याय काल में अतिनिद्रा का त्याग करना चाहिए।)
8. राधिका प्रतिदिनं वाटिकायां भ्रमणं करोति।
   (राधिका प्रतिदिन वाटिका में भ्रमण करती है।)
9. भारतीयसंस्कृतिः अध्यात्मप्रधाना।
   (भारतीय संस्कृति अध्यात्मप्रधान है।)
10. हे पार्थ! यथाशक्ति कार्यं करोतु।
    (हे अर्जुन! अपनी शक्ति के अनुसार कार्य करो।)